ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 51 कुल पृष्ठ-8 26 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 आ. शु.-12

आर्य समाज देवनगर दिल्ली में विजयदशमी पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्बोधन

श्री सुशील बाली एडवोकेट ने किया मंच संचालन

आर्य समाज देवनगर, दिल्ली के तत्वावधान में 24 अक्टूबर, 2023 को विजयदशमी पर्व धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ। स्वामी जी के अतिरिक्त क्षेत्र के विधायक श्री विशेष रवि भी विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में पधारे। इस पूरे आयोजन का मंच संचालन आर्य समाज देवनगर के प्रधान श्री सुशील बाली ने किया। सर्वप्रथम विशेष यज्ञ किया गया जिसमें श्री सुशील बाली सपत्नीक यजमान बनें। उनके अतिरिक्त उनकी पुत्रवधु श्रीमती अलिशा बाली, आर्य समाज के मंत्री श्री रमेश बेदी, श्री आदित्य आर्य एवं अन्य प्रमुख पदाधिकारियों ने भी यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की।

इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के व्यायाम शिक्षक श्री रोहित के प्रयास से लगभग 60 बच्चों ने भी यज्ञ में भाग लिया। आर्य समाज का हॉल श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था। यज्ञ के उपरान्त विश्व चैम्पियन में स्वर्ण पदक विजता खिलाड़ी श्री करणजीत सिंह तथा कुमारी पिंकी का भी आर्य समाज की ओर से स्वागत किया गया। इसी प्रकार सभी बच्चों को टी–शर्ट एवं मेडल देकर पुरस्कृत किया गया।

अपने ओजस्वी उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने विजयदशमी पर्व के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि यह पर्व बुराई पर अच्छाई की विजय है, अधर्म पर धर्म की विजय है। अतः सभी को इस पर्व पर विशेष संकल्प लेने चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि हम कागज के रावण, कुम्भकरण और मेघनाद को जलाकर खुश हो लेते हैं, किन्तु हमारे मनों में बैठे रावण को हम नहीं पहचानते। एक सीता के अपमान से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने रावण के अहंकार को चूर–चूर कर दिया था, किन्तु आज हजारों महिलाओं का उत्पीड़न हो रहा है। नारी जाति को विविध तरीके से अपमानित, प्रताड़ित एवं तिरस्कृत किया जाता है। भाई–भाई का गला काट रहा है। बेटा अपने पिता का अपमान करता है। फिर भी हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जय–जयकार करके समझ लेते हैं कि हमने राम की पूजा कर ली है। यदि राम की पूजा तथा सत्कार उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारकर करोगे तो ही राम की सही जय–जयकार होगी। आज लोग राम को तो मानते हैं किन्तु राम की बात नहीं मानते। अतः वर्तमान समय में जो रावण रूपी भ्रष्टाचारी, अत्याचारी, बलात्कारी, शोषक लोग समाज में दनदना रहे हैं, जब तक उनके विरुद्ध हम खड़े नहीं होंगे, तब तक विजयदशमी का पर्व हमारे लिए विशेष उपयोगी सिद्ध नहीं होगा। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द जी की दूसरी जन्मशताब्दी को भी उत्साह के साथ मनाने की प्रेरणा दी।

क्षेत्र के विधायक श्री विशेष रवि ने भी अपने उद्गार प्रगट किये और आर्य समाज का राष्ट्रीय उत्थान में जो योगदान रहा है उसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

समाज के प्रधान श्री सुशील बाली ने सभी विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। अन्त में जलपान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संस्कारों के सन्दर्भ में ऋषि दयानन्द सरस्वती

– डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी

वेद का धर्म

वेद का धर्म वैदिक धर्म है ज्ञान का धर्म है, सत्य का धर्म है, न्याय और प्रकाश का धर्म है। वह हिन्दू धर्म, पौराणिक धर्म, शैव-शाक्त कापालिक या वैष्णव धर्म नहीं है वह मानव-धर्म है। वेद का 'आर्य' शब्द जाति-वर्ण काल या देश का वाचक नहीं है, वह गुणवाचक है। स्वयं वेदों का 'विजानीहि आर्यान् ये च दस्यव:' (ऋग्वेद 1/51/8) मन्त्र बताता है कि वेद का 'आर्य, दस्यु = डाकू या लुटेरा = शोषक का विरोधी है। वेद की भाषा कभी किसी काल की जनभाषा नहीं रही। जनभाषा 'संस्कृत' रही है। संस्कृत की तरह अन्य सभी भाषाओं में वेद के शब्द हैं। वैदिक भाषा के नियम बहुत ही विस्तृत हैं और इसके शब्द भी यौगिक हैं। संस्कृत भाषा के नियमों में संकोच और शब्दों की प्रवृत्तिरूढ़ि होती गई है अन्य भाषाओं की तरह। आधुनिक भाषाशास्त्री भी भारोपीय भाषा परिवार का मूल वैदिक भाषा को मानते हैं। उनके भाषाविदों का यह सुझाव भी रहा है कि इन्डो-योरोपियन, इण्डो-जर्मनिक या इण्डो-हिट्टाइट के स्थान में इस भाषा परिवार का नाम आर्य परिवार रखा जाए। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ. उदयनारायण तिवारी का कहना था कि स्वामी जी का 'आर्य भाषा' नाम रखना बहुत बड़े अर्थ गाम्भीर्य और दूरदृष्टि का सूचक था। वेद का परमेश्वरीय नाम 'ओ३म्', धार्मिक कृत्य 'यज्ञ', अभिवादन 'नमस्ते' और श्रेष्ठ सज्जन का नाम 'आर्य' इन शब्दों में व्यापक दृष्टि, अर्थ विशदता, सर्वजन ग्राह्यता और असाम्प्रदायिकता है। इनकी तुलना इसके समानार्थी अन्य किसी शब्द से नहीं की जा सकती।

ऋषि और वेद का अर्थ

यह अच्छी तरह सबको ज्ञात है कि वेदों का सम्बन्ध, द्रष्टृत्व ऋषियों से है – 'साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूव:'। अत: वेदों का मर्म या अर्थ ऋषि दृष्टि से ही उद्घाटित होता है। वैदिक ऋषि मधुच्छन्दा, वशिष्ठ, वामदेव, ऋषिकाएँ अपाला घोषा, रोमशा से लेकर परवर्ती ऋषि ऐतरेय, याज्ञवल्क्य, गोपथ, मनु, यास्क पाणिनी और पतञ्जलि तक सभी ऋषियों की वैदिक मान्यताएँ तक है। उसमें कोई मत वैभिन्य नहीं है। वेदों के शब्द यौगिक हैं, उनमें लौकिक इतिहास नहीं हैं, वे सभी सत्य विद्याओं के मूल हैं, धर्म-अर्थ-काम त्रिवर्ग के साधक सभी शास्त्रों के वे उत्स हैं स्त्रोत हैं। व्याकरण, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, न्याय, सांख्य, योग, मीमांसा, वैशेषिक और वेदान्त, औपनिषदिक ब्रह्मविद्या, प्राणविद्या, यज्ञीय कर्मकाण्ड, आयुर्वेद, धनुर्वेद, अर्थवेद तथा गान्धर्ववेद और विविध विद्याओं गणित, राजनीति, सैन्य संचालन, कृषि, व्यापार, भूगर्भ, वनस्पति एवं जन्तु विज्ञान प्रभृति शाखाओं का विस्तार वैदिक ऋचाओं की प्रेरणा से हुआ है। उनमें विद्या, युक्ति, तर्क और विज्ञान के विरुद्ध कुछ भी नहीं है। ऋषियों की यही दृष्टि दयानन्द को भी मान्य है। दु:ख है कि वेदार्थ की यह प्राचीन दृष्टि से मेल नहीं खाते। अत: ऋषि दयानन्द उन्हें चुनौती देते हैं। यही कारण है कि ऋषि दयानन्द यास्क से सहमत हैं सायण और महीधर से नहीं। पाणिनि से सहमत हैं भट्टोजीदीक्षित से नहीं। मनु से सहमत हैं 'कुल्लूक भट्ट' से नहीं। व्यास और जैमिनि से सहमत हैं, शंकराचार्य और शबरस्वामी से नहीं। क्योंकि मूलसूत्रकार ऋषियों के ग्रन्थों के व्याख्याकार आचार्यगण बहुधा मूल पथ से भटककर सम्प्रदाय का प्रवर्तन कर देते हैं।

ऋषियों के प्रतिनिधि – 'दयानन्द'

स्वामी दयानन्द जिस धर्म के प्रचारक हैं उपदेष्टा हैं, वह वेद का धर्म और ऋषियों का धर्म है। आज का हिन्दू धर्म या पौराणिक धर्म, जिसे सनातन धर्म भी कहा जाता है, दुर्भाग्य से प्राचीन (पुराण का यौगिक अर्थ) या शाश्वत ('सनातन' शब्द का अर्थ) सिद्धान्तों का पोषक नहीं रह गया है। उदाहरण के लिए हिन्दुओं में प्रचलित कर्मकाण्ड पर दृष्टिपात कीजिए।

सन्ध्यादि नित्यकर्म में ऊँ केशवाय नम:। ऊँ नारायणाय नम:। ऊँ माधवाय नम: (नित्यकर्म पूजा प्रकाश, पृ. 18 गीता प्रेस गोरखपुर, दशम संस्करण, 2053 वि. सं.) ये तीन लौकिक संस्कृत वाक्य बोलकर आचमन किया जाता है। जबकि स्वामी दयानन्द जी ने 'शन्नो देवीरभिष्टय' (यजुर्वेद 36/12) तथा 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' प्रभृति (आश्वलायन गृहयसूत्र 1/24/12, 21, 22) तीन मंत्रों से क्रमश: सन्ध्या और अग्निहोत्र में 'आचमन' का विधान किया है। वेदों में भी उच्चावचता की मान्यता के कारण दैनिक संध्या में पौराणिक लोग अथर्ववेद का मन्त्र नहीं बोलते। सन्ध्या में 'अघमर्षण' तथा 'उपस्थान' के मन्त्रों (पूर्वकाल से प्रचलित विधि) को यथावत् स्वीकार करते हुए स्वामी जी ने 'मनसा परिक्रमा' के लिए अथर्ववेद के प्राची दिग् (अथर्व. 3/27/1-6) प्रभृति 6 मन्त्रों का भी विनियोग किया है। ऋषि दयानन्द प्रवर्ति संस्कार की विधि या कर्मकाण्ड में सभी वेदों के साथ-साथ ऋषियों के गृहयसूत्र, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक तथा श्रोतसूत्रों की भी आवश्यक मान्यतायें संगृहीत हैं। संध्या, अग्निहोत्र और संस्कार की पद्धतियों में ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त अन्य किसी आचार्य का ग्रन्थ इतना व्यापक नहीं है, जिसमें पूर्व ऋषियों के प्रमाणों का अधिकाधिक ग्रहण करके उसमें सामंजस्य बिठाने का प्रयत्न किया गया हो। दयानन्द से पूर्व संस्कारों की परम्परा द्विजों से संकुचित होकर ब्राह्मण परिवारों तक सीमित हो गई थी। ब्राह्मण भी अपनी-अपनी वेद शाखा के गृह्यसूत्र के अनुसार संस्कार सम्पन्न करा लेते हैं। स्वामी जी ने इस परम्परा को तोड़कर जन साधारण में संस्कारों का प्रचलन कराने के लिए चारों वेदों के गृह्यसूत्र के अनुसार (ऋग्वेद का आश्वलायन, यजुर्वेद का पारस्कर, सामवेद का गोभिल तथा अथर्ववेद का शौनक) सम्यक् रूप से आर्ष संस्कार पद्धति प्रस्तुत की। इस प्रकार स्वामी जी सभी ऋषियों और चारों वेदों के प्रशंसक हैं और प्रतिनिधि प्रवक्ता भी। उन्होंने कोई नवीन मत-मतान्तर की स्थापना नहीं की है। उनका संदेश वेदों का संदेश है, ऋषियों का संदेश है, संसार के सभी मनीषियों के संदेशों का सार है।

संस्कार विधि का वैशिष्ट्य

स्वामी दयानन्द को 'संस्कार विधि' के निर्माण करने की क्यों आवश्यकता पड़ी? इसका स्थूल रूप से यही उत्तर है कि आर्य जाति में वेदादिशास्त्र विहित संस्कारों का अभाव देख, ऋषि ने करुणामय मन से इस अध:पतित जाति के पुनरुत्थानार्थ इस ग्रन्थ को लिखा। महर्षि दयानन्द से पूर्व आर्य लोगों में केवल थोड़े से ही संस्कारों का लुप्तप्राय रूप से प्रचार था। 'गर्भाधान' और 'पुंसवन' तो लोगों के लिए स्वप्न हो चुका था। 'सीमन्तोन्नयन' संस्कार का प्रचार केवल स्त्रियों के विधि द्वारा ही प्रचलित था जहाँ तक कि बिना मन्त्रादि के स्त्रियाँ स्वयं कुछ एक फल या मिठाई आदि लेकर गर्भिणी की झोली में डाल देती थीं। 'जातकर्म' का विचार ही न था। स्व-जातियों को बुलाकर लोग स्वयं नाम रखकर 'नामकरण' संस्कार की पूर्ति कर दिया करते थे। 'निष्क्रमन' और अन्नप्राशन' तो किसी को स्मरण भी न था। 'मुण्डन संस्कार' अपूर्ण और अवैदिक रीति से प्रचलित था। 'कर्णवेध' स्त्रियाँ स्वयं या किसी यवन (=मुसलमान) से करा लेती थीं। 'उपनयन' भी अपूर्ण रीति से असमय पर होता था। कुछ लोग तो विवाह-कार्य प्रारम्भ होने पर विवाह-स्नान के समय में यज्ञोपवीत धारण करते थे। कई एक देवी मन्दिरों में देवी-देवताओं के चरणों से यज्ञोपवीत का स्पर्श करके, बिना मन्त्र ही अपनी सन्तान का यज्ञोपवीत करते थे।

उपनयन का फल ब्रह्मचर्य धारण पूर्वक 'वेदारम्भ' का तो किसी को पता भी न था, फिर 'समावर्तन' के लिए क्या कहा जाये? केवल एक विवाह संस्कार को ही सब संस्कारों से अधिक प्रधानता दी जाती थी। वहां भी वाह्य आडम्बर बहुत और विधि का विचार बहुत थोड़ा था। उसमें भी शास्त्र विरुद्ध इतनी कुरीतियाँ थीं कि जिनका पूर्ण रूप से वर्णन किया जाये तो एक भिन्न शास्त्र बन जाए। उन नाम मात्र के संस्कारों में भी ब्राह्मणों ने नवग्रह-पूजन, गणेश-पूजनादि अनेक प्रकार की अवैदिक और अनार्ष विधियाँ चलाई हुई थीं। वेदों में इन ग्रहों की पूजा और गणेशादि की पूजा का वर्णन तो होना ही कहां था, पर आश्चर्य तो यह है कि इनका मूल पारस्कर, आश्वलायन, गोभिलादि प्रसिद्ध गृह्यसूत्रों में भी कहीं नहीं मिलता, जो कि संस्कारों के मूल ग्रन्थ हैं, और जिनकी सत्ता से ही संस्कारों की सत्ता है। न जाने फिर इन पौराणिक लोगों ने इस प्रकार की कल्पित बातों का प्रक्षेप इन पवित्र संस्कारों में क्यों किया?

इन 'संस्कार विधि' ग्रन्थ को पहले महर्षि ने वि. सं. 1932 में लिखा था। फिर 8 वर्ष के अनन्तर आषाढ़ मास वि. सं. 1940 में इस ग्रन्थ का परिमार्जित रूप से शोधन कर द्वितीय संस्करण छपवाया।

अपनी संस्कार विधि के प्रारम्भ में ही महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि –

वेदादिशास्त्रसिद्धान्तमाध्याय परमादरात्।

आर्योह्यिं पुरस्कृत्य शरीरात्मविशुद्धये।।

(संस्कार विधि पृ.-3)

अर्थात् वेदादिशास्त्रों का परमादर से चिन्तन करके आर्यों के इतिहासानुकूल शरीर और आत्मा की शुद्धि के लिए (यह ग्रन्थ रचा है)। 'उपदेश-मंजरी' की व्याख्यान माला में सातवें व्याख्यान, जो स्वामी जी ने जुलाई, 1876 ई. में पूना नगर में दिया था, उसमें 'कर्णवेध' संस्कार का वर्णन नहीं है। वहाँ उन्होंने गृहाश्रम को भिन्न लिखकर संस्कारों की गणना 16 षोडश की है। प्रथम 'संस्कार विधि' जो 1933 वि. सं. में प्रकाशित हुई थी, उसमें 'कर्णवेध' का वर्णन तो मिलता है, परन्तु वहाँ स्वामी जी ने 'वानप्रस्थाश्रम संस्कार' को भिन्न न मानकर उसे 'संन्यास' के अन्तर्गत माना है।

इन दो परस्पर विरुद्ध बातों का यह उत्तर है कि पहले 1875 ई. में स्वामी जी ने 'कर्णवेध' को बहुत उपयोग न समझा था। क्योंकि इसका वर्णन पारस्कर गृह्यसूत्र के कात्यायन परिशिष्ट भाग को छोड़कर अन्य किसी आज तक प्रकाशित गृह्यसूत्र में नहीं मिलता। प्रतीत होता है कि यह बात अनुभव कर उन्होंने इस संस्कार को प्रमुखता नहीं दी थी। यह भी सम्भव है कि इस संस्कार का वर्णन उन्होंने अपने व्याख्यान में किया हो और इसे 'चूड़ाकर्म-संस्कार' के अन्तर्गत कहा हो, परन्तु नोट करने वाले महाशय ने यह नोट न किया हो। यह भी सम्भव है कि नोट करके भी 'उपदेश मंजरी' में प्रकाशित न किया हो। क्योंकि उसमें व्याख्यानों को संक्षेप रूप में दिया है, विस्तार रूप से नहीं।

कैसे भी हो, यह बात तो सिद्ध ही है कि उस समय में स्वामी जी इस संस्कार को नहीं मानते थे।

इन पूना व्याख्यानों के तीन माह बाद अक्टूबर, 1875 में जब स्वामी जी ने संस्कार विधि का प्रथम संस्करण निकाला तो देश में प्राय: सर्वत्र 'कर्णवेध' का प्रचार देख, शास्त्रानुकूल होने से उन्होंने संस्कारमाला में इसे भी स्वीकार किया।

वानप्रस्थाश्रम का भी संन्यासाश्रम में बहुत भेद न जानकर आचार्य दयानन्द ने प्रथम संस्करण में इसे संन्यास के अन्तर्गत माना और गृहाश्रम को मुख्य समझा। परन्तु 1940 वि. सं. (1883 ई.) में जब 8 वर्ष पीछे ऋषि ने 'संस्कार विधि' का द्वितीय संस्करण निकाला, तो उसमें 'कर्णवेध' और 'वानप्रस्थाश्रम' को गृहाश्रम की अपेक्षा अधिक उपयोगी जान भिन्न-भिन्न लिखा।

संस्कार तो स्वामी जी को छोटे-बड़े सदा ही अभिमत थे, किन्तु उनकी मुख्यता और गौणता वे देशानुकूल करते थे। पहिले 1875 ई. के जुलाई मास में कर्णवेध को साधारण जानते थे। अनेक देशों में भ्रमण करते-करते आर्य जाति के प्रत्येक प्रान्तीय द्विजों की रीतियों का पूर्णरूप से अनुभव प्राप्त करके आठ वर्ष पीछे 1940 वि. सं. में जब उन्होंने संस्कार विधि का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया तो 'कर्णवेध' और 'वानप्रस्थ' को बहुपयोगी जान उन्हें गृहाश्रम की अपेक्षा विशेषता दी। 'संस्कार विधि' के प्रथम संस्करण में वर्णित गृहाश्रम को द्वितीय संस्करण में विवाह संस्कार के अन्तर्गत किया और संन्यासान्तर्गत वानप्रस्थ को भिन्न लिखा।

संस्कार विधि के द्वितीय संस्करण में जो न्यूनता वा अधिकता हुई है, उसके लिए स्वामी जी महाराज के ही लेख को उद्धृत करते हैं, जो उन्होंने द्वितीय संस्करण की भूमिका में दिया है –

''जो विषय प्रथम अधिक लिखा था उसमें अत्यन्त उपयोगी न जानकर छोड़ भी दिया है। और अब की बार जो-जो अत्यन्त उपयोगी विषय हैं, वह-वह अधिक भी लिखा है। इसमें यह न समझ जावें कि प्रथम युक्त न था, और प्रथम युक्त छूट गया, उसका संशोधन किया है।''

स्वामी जी के इन वाक्यों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उन्होंने युक्त विषय को छोड़ा नहीं, प्रत्युत द्वितीय संस्करण में संशोधन किया है। ऐसे ही यदि उन्होंने गृहाश्रम को विवाहान्तर्गत और वानप्रस्थ को संन्यासान्तर्गत न मानकर, प्रत्युत उसे स्वतंत्र मानकर द्वितीय संस्करण में यह संशोधन किया तो कोई दोष की बात नहीं।

मनु महाराज यदि पुंसवन, सीमन्तोन्नयन और कर्णवेध संस्कारों का वर्णन स्व मनुस्मृति में नहीं करते तो इसमें मनु महर्षि का अपमान नहीं किन्तु उन्होंने अपने विचारानुकूल विशेषता नहीं दी और उधर अन्य गृह्यसूत्र कर्ता ऋषि इन्हें सर्वत्र ही स्व-सूत्र ग्रन्थों में विशेषता देते हैं। वे वानप्रस्थ और संन्यास संस्कार का वर्णन नहीं करते। आश्वलायन के अतिरिक्त अन्य ग्रह्यसूत्रकर्ता ऋषियों ने अन्त्येष्टि संकार का वर्णन नहीं किया है इससे हम ये नहीं कह सकते हैं कि इसमें ग्रह्यसूत्रकर्ताओं की त्रुटि हैं इसका समन्वय यही है कि उन महापुरुषों ने अपने-अपने समय में देश कालानुकूल वेदमूल को लेकर संस्कारों का विधान किया। जैसे प्राचीन काल में ऋषियों ने विधियाँ लिखीं, वैसे ही उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े धर्मसंशोधक वेदत्त्वज्ञाता स्वामी दयानन्द ने भी देश कालानुकूल जिस-जिस संस्कार की बहुत विशेषता अनुभव की उसे मुख्य और अन्य साधारण संस्कारों को गौण समझकर उन्हें मुख्य संस्कारों के अन्तर्गत किया।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती की रचनाओं में 'संस्कार-विधि' का प्रमुख स्थान ह। उनके महत्त्वपूर्ण तीन ग्रन्थ 1. संस्कार विधि, 2. सत्यार्थ प्रकाश, 3. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका हैं।

प्राचीन ऋषियों ने मनुष्य जन्म को सुसंस्कृत बनाने के लिए बहुविध संस्कारों की योजना की है। मनुस्मृति में गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त चौदह संस्कारां का उल्लेख है। अन्य गृह्यसूत्रों में भी अनेकविध संस्कारों का वर्णन मिलता है। संक्षेप में उन गृह्यसूत्रों के अनुसार संस्कारों की संख्या इस प्रकार है :-

आश्वलायन गृह्यसूत्र	13 तरह
कौषीतकि (शांखायन) गृह्यसूत्र	12 बारह
पारस्कर गृह्यसूत्र	14 चौदह
आपस्तम्ब गृह्यसूत्र	12 बारह
हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र	10 दस
मानव गृह्यसूत्र	13 तेरह
गोभिल गृह्यसूत्र	12 बारह
जैमिनि गृह्यसूत्र	11 ग्यारह
कौशिक गृह्यसूत्र	10 दस
गोपथ ब्राह्मण	11 ग्यारह
मनुस्मृति	14 चौदह

शेष पृष्ठ 6 पर

आत्मदर्शी महर्षि दयानन्द सरस्वती

– पं. चमूपति जी एम.ए.

ऋषि दयानन्द का जन्म एक भ्रांति प्रधान युग में हुआ था। कोई ऐसी असम्भव बात न थी जिसे योग की सिद्धि के नाम पर सम्भव न समझा जाता हो। योगियों की विशेषता ही चमत्कार था। धार्मिक नेताओं का गौरव ही उनके अलौकिक कारनामों के कारण था।

धर्म की इस प्रवृत्ति को आर्य समाज ने अन्धविश्वास समझा और इसका घोर खण्डन किया। परिणाम यह हुआ कि आर्य समाज की श्रद्धा विभूति मांत्र से उड़ गई। सौभाग्यवश आर्य समाज का अपना ऋषि मूर्त सदाचार था। ऋषि की इस विभूति को आर्य समाज के प्रचारकों ने हाथों हाथ उठा लिया और इसी चमत्कार की कसौटी पर संसार भर के सिद्धों के जीवन परखे जाने लगे। भला इस क्षेत्र में किसी की ताव थी कि दयानन्द से लोहा लेता? दयानन्द का निष्पाप कुन्दन सा जाज्वल्यमान उज्ज्वल चरित्र आर्य समाज का वह अमोध हथियार था जिसके आगे विरोधी चारों खाने चित्त थे। आर्य समाज को अपने मन्तव्यों के गौरव की स्थापना के लिए किसी अलौकिक कारनामे का आश्रय लेना ही नहीं पड़ा।

तो क्या अलौकिक कारनामों की कथाएं वस्तुत: मिथ्या ही है? क्या संसार की सम्पूर्ण घटनाओं के संचालक केवल भौतिक नियम तथा भौतिक शक्तियाँ ही हैं? या क्या आत्मा भी कोई सचमुच की वस्तु है – ऐसी वस्तु जिसके अस्तित्व का संसार के जीवन पर मूर्त अनुभव में आने वाला प्रभाव पड़ता हो?

19वीं शताब्दी के आरम्भ का विज्ञान प्रधान यूरोप आत्मा तथा परमात्मा की सत्ता को ही जवाब दे चुका था। जब विश्वचक्र की सभी घटनाओं का समाधान प्राकृतिक नियमों द्वारा हो जाता है तो अप्राकृतिक सत्ताओं को स्वीकार करने की आवश्यकता ही क्या है? उन दिनों विज्ञान का अर्थ ही प्राकृतिक विज्ञान समझा जाता था। मनोविज्ञान का भी एक ऐसा रूप निकल आया जिसका नाम ही पड़ा मन: शरीर शास्त्र। इसके द्वारा मानसिक घटनाओं की व्याख्या शारीरिक बात तन्तुओं ही की परिभाषा में की जाने लगी। परन्तु विज्ञान का तो काम ही गवेषणा करना है। मानव जीवन का मानसिक पहलु वैज्ञानिक अन्वेषणा के लिए एक विशेष क्षेत्र पेश करता है। इस क्षेत्र की साधारण घटनाओं की व्याख्या भी भौतिक नियमों द्वारा करनी असम्भव है। परन्तु साधारण घटनायें फिर साधारण थीं, इनकी ओर अन्वेषण कर्त्ताओं का विशेष ध्यान क्यों जाता? आंख देखती क्यों है? जिन भौतिक अंशों के संयोग से यह बनी है उन्हें कोई रासायनिक अब मिला देखे। एक कृत्रिम चक्षु बन जायेगा, परन्तु वह देख नहीं सकेगा। भूख का रूप भौतिक भोजनाभाव के अतिरिक्त एक विशेष प्रकार की मानसिक वेदना का है। उसकी भौतिक व्याख्या करना असम्भव है। अन्वेषणकर्त्ता आश्चर्य चकित तब हुए जब सैकड़ों मील की दूरी पर हो रही घटनाओं का साक्षात्कार कई मनुष्यों ने इस प्रकार किया मानो वे घटनायें उनकी आंखों के सामने हो रही हैं। बरसों बाद होने वाली बात इसी वर्तमान क्षण में मूर्त होकर दृष्टि के सामने आ गई। एक हृदय में उद्‌बुद्ध हो रही भावना, दूसरे हृदय में झट संचारित हो गई। विचार का संचार बिना किसी भौतिक बिजली के तार के किया गया। इन विचित्र कार्यों की भौतिक व्याख्या क्या हो सकती थी?

आज विज्ञान किसी अप्राकृतिक सत्ता के होने का विरोध नहीं करता और यद्यपि सदाचार का पक्का भौतिक आधार किसी अलौकिक सत्ता की अनुभूति ही हो सकती है – बिना आध्यात्मिक सदाचार युक्ति के क्षेत्र में ठहर ही नहीं सकता तो भी सदाचार के नियमों का क्रियात्मक पालन बिना इस अनुभूति के भी भली प्रकार होता रहा है। मानव समाज के कई अद्वितीय सेवक नास्तिक कट्टर निरीश्वरवादी हुए हैं।

यह सच है कि बिना सदाचार के धर्म का कोई रूप ही नहीं बनता। किसी पुरुष में आध्यात्मिक विभूतियाँ चाहे कितनी भी स्पष्ट क्यों न हों, यदि उसके आचार पर उन विभूतियों का कोई विशेष रंग नहीं चढ़ा तो धर्म के क्षेत्र में वह पुरुष पांव नहीं रख रहा, किन्तु दुलत्ति चलाने की चेष्टा मात्र ही कर रहा है। आध्यात्मिक अनुभूति की पूर्ण परिणति सन्त स्वभाव युक्त सदाचार में ही है। इसी सन्त स्वभाव को आधुनिक मनोवैज्ञानिक धर्म कहते हैं। सदाचार ही धर्म का बाह्य अंग है, परन्तु इसमें आन्तरिक मधुरता अलौकिक संजीवनी का सा रस आध्यात्मिक भावना से ही आता है।

ऋषि दयानन्द में सदाचार की पराकाष्ठा है, परन्तु क्या उनके इस सदाचार का आधार कोई आध्यात्मिक अनुभूति थी। वे तर्क के पुतले थे, परन्तु क्या वह तर्क नीरस था? या उसमें रसपूर्ण भावना का भी एक प्रबल पुट था? तर्क ने उनकी भक्ति को आंख मीच कर 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' की प्रवृत्ति के दूर ही दूर रखा, परन्तु उनके महत्त्व की इतिश्री इसी में हो जाती है कि उन्हें तर्क के क्षेत्र में धोखा नहीं दिया जा सकता था।

'साक्षात् कृत धर्माण ऋषयोबभूव:' – यास्क की इस उक्ति के अनुसार ऋषि कहते ही उस पुरुष को हैं जिसने धर्म का अर्थात् उस शक्ति का जो समस्त सत् पदार्थों को धारण करती है, साक्षात्कार किया हो। भौतिक संसार की आधारभूत एक आध्यात्मिक सत्ता है। सदाचार का वास्तविक मूल यही है। ऋषि अपने आध्यात्मिक नेत्रों से उसका दर्शन करता है। इसी में उसका ऋषित्व है। दूसरे शब्दों में हमारे प्रश्न का एक और रूप यह हो जायेगा कि क्या स्वामी दयानन्द ऋषि थे?

इस प्रश्न का उत्तर किसी और की साक्षी से दे सकना असम्भव है। सन्तों के जीवन में कुछ ऐसे बाह्यगुण भी पाये जाते हैं, जिनसे वे प्राणिमात्र को अपनी ओर खींच लेते हैं। इनसे उनका आत्म साक्षात्कार प्रमाणित होता है, परन्तु बाह्य लक्षण फिर भी बाहर की ही वस्तु है। उसके सम्बन्ध में भ्रांति हो सकती है। अपने आन्तरिक अनुभव का अन्तिम गवाह तो प्रत्येक पुरुष अपने आप ही हो सकता है। विभु परमेश्वर का सम्बन्ध प्रत्येक आत्मा से उसके हृदय की गुफा में ही होता है। वेदों तथा उपनिषदों में इन आध्यात्मिक अनुभूतियों के मुंह बोलते चित्र मिलते हैं, यद्यपि किसी उपनिषद्‌कार ने अपने वैयक्तिक अनुभव का वर्णन अपने नाम के साथ जोड़कर नहीं किया। फिर वेद तो हैं ही वेद, उनमें नामों का क्या काम?

यद्यपि ऋषि दयानन्द ने भी इस विषय में मौनावलम्बन किये रहने की प्राचीन ऋषियों की शैली का पूर्णतया अनुसरण किया है तो भी कई स्थानों पर उनकी आध्यात्मिक अनुभूति की अनायास झांकी सी मिल जाती है। हम नीचे कतिपय उक्तियों और घटनाओं का उल्लेख करेंगे, जिनमें ऋषि के जीवन के इस पहलु पर प्रकाश पड़ सके।

ऋषि दयानन्द के योग प्रत्यक्ष का पहला उल्लेख उनकी आत्मकथा ही में मिलता है। ऋषि लिखते हैं –

फिर एक मास के पश्चात् मैं भी उनकी आज्ञा के अनुसार दूधेश्वर महादेव के मन्दिर में उनसे जाकर मिला। वहाँ उन्होंने योगविद्या के अन्तिम रहस्य और उसकी प्राप्ति की विधि बताने की प्रतिज्ञा की थी सो उन्होंने भी अपना वचन पूरा किया और कथनानुसार मुझको भी निहाल कर दिया।

ऋषि ने भौतिक क्षेत्र में भी प्रत्यक्ष ही की साक्षी का अवलम्बन किया था। यह बात उनके अपने हाथ से शवछेदन की क्रिया करने से प्रकट होती है। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी उनकी यही अवस्था थी। सुनी सुनाई पर विश्वास कर लेना उनकी प्रकृत्ति के सर्वथा प्रतिकूल था। उनके एक पत्र में नीचे लिखी सारगर्भित उक्ति ध्यान देने योग्य है –

बहूनामार्याणां वेदशास्त्र बोध समाधि योग विचाराभ्याम्।
जीव स्वरूप ज्ञानं बभूव भवति भविष्यति वेति।।
(ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन भा. 1 पृ. 57)

इस वाक्य में भवति शब्द विशेष ध्यान देने योग्य हैं।

कुछ समय महर्षि केवल समाधि ही का आनन्द लेते रहे थे। तत्पश्चात् वे देश-सुधार का कार्य करने लगे। वे लिखते हैं –

हमने केवल परमार्थ और स्वदेशोन्नति के कारण समाधि और ब्रह्मानन्द को छोड़कर यह कार्य ग्रहण किया है।

(पत्र और विज्ञापन भाग 4 पृ. 18)

आर्याभिविनय में ऋषि दयानन्द के हृदय के आन्तरिक उद्‌गार प्रकट हुए हैं। परमेश्वर को सम्बोधित कर कहते हैं :-

'हम से अलग आप कभी मत हों।' (पृ. 110)

'आप (स्वमुख) स्वशक्ति से सब जीवों के हृदय में सत्योपदेश नित्य ही कर रहे हों। (पृ. 87)

'आम साम को सदा गाते हो, वैसे ही हमारे हृदय में सब विद्या का प्रकाशित गान करो। (पृ. 118)

जैसे सूर्य की किरण, विद्वानों का मन और गाय, पशु अपने-अपने विषय और घासादि में रमण करते हैं व जैसे मनुष्य अपने घर में रमण करता है वैसे ही आप स्वप्रकाश युक्त हमारे हृदय (आत्मा) में रमण कीजिए। (पृ. 84)

परमेश्वर से ऋषि दयानन्द का सम्बन्ध साक्षात् था। वे सदा उसे अपने अंग-संग पाते थे और उससे अलग न होने का आग्रह करते थे। प्रभु के मधुर आलाप को सुनते थे और उसके अति रमणीय रमण का आनन्द लेते-लेते स्वयं भी उसी में रत हो जाते थे।

इस सम्बन्ध के परिणामस्वरूप कुछ विशेष मानसिक शक्तियाँ योगी को अनायास प्राप्त हो जाती हैं। उन्हें सिद्धि कहा जाता है। योगी इन शक्तियों की आकांक्षा नहीं करता। उनमें आसक्त हो जाने से समाधि के रास्ते में बाधा खड़ी हो जाने की सम्भावना है। ऋषि अपने विषय में लिखते हैं :-

मैं इन तमाशों की बातों को देखना दिखलाना उचित नहीं समझता। चाहे वे हाथ की चालाकियों से हों, चाहे योग की रीति से हों किन्तु कोई चाहे तो उसको योग की रीति सिखला सकता हूँ कि जिसके अनुष्ठान करने से वह स्वयं सिद्धि को प्राप्त हो जाये। (पत्र और विज्ञापन भाग-1)

एक और स्थान पर लिखा है – देखो पूर्वकाल में हमारे ऋषि मुनियों को कैसी पदार्थ विद्या आती थी कि जिससे आत्मा के बल से सब अन्त:करण के भेद को शीघ्र ही जान लिया करते थे – भीतर के पदार्थों के योग से योगी लोग अनेक अद्‌भुत कर्म कर सकते थे। (पत्र और विज्ञापन भाग-2 पृष्ठ-20)

इन दो उद्धरणों को मिलाने से स्पष्ट हो जायेगा कि ऋषि दयानन्द जब किसी मानसिक तथ्य का वर्णन सामान्य संज्ञा द्वारा ऋषियों की सम्पूर्ण श्रेणी के विषय में करते हैं तो वह तथ्य उनका अपना अनुभूत होता है। जीवन स्वरूप ज्ञान के सम्बन्ध में जो एक संस्कृत वाक्य ऊपर उद्‌धृत किया गया है उसका निर्देश ऋषि को अपनी ओर होने में अब कोई सन्देह नहीं रहेगा।

ऋषि दयानन्द को दूर देश तथा भविष्य काल की घटनाओं का साक्षात्कार हो जाने के अनेक उदाहरण उनके जीवन चरित्र में मिलते हैं। ऋषि ने एक नवयुवक को एक विशेष अवधि तक विवाह करने से रोक दिया था। अवधि के समाप्त होते ही उसका देहान्त हो गया। ऋषि की योग दृष्टि ने एक आर्य बाला को उम्रभर के वैधव्य से बाल-बाल बचा लिया। एक भक्त दूध लाया? ऋषि ने पूछा क्या रास्ते में सांप देखा था? वह आश्चर्यचकित था – ऋषि को इस घटना का ज्ञान कैसे हुआ इत्यादि।

आध्यात्मिक अनुभूति का एक फल यह भी होता है कि जब वह अनुभूति किसी को प्राप्त हो जाती है तो लोगों के हृदय में उसके लिए अनायास भक्ति का भाव उमड़ने लगता है। यह बात यहाँ तक पहुँचती है कि भक्त जन जब कभी आंखे मीचते हैं उनके सामने गुरुदेव का चित्र सा आ जाता है और वे चाहते हैं कि गुरुदेव हमेशा उनके अंगसंग रहें। गुरु से सम्बन्ध रखने वाली प्रत्येक वस्तु में भी एक विशेष भक्ति का भाव पैदा हो जाता है। ऋषि दयानन्द के जीवन में यह बात जगह-जगह पर उल्लेखित है हम केवल दो उदाहरणों का उल्लेख करेंगे –

ऋषि की सेवा में ईश्वरानन्द सरस्वती का एक पत्र मिलता है जिसमें लिखा है –

मेरे पर भगवद्‌चरणों की धूरी स्वप्न में वरसी है सो मैंने खूब स्नान किया। (पत्र व्यवहार पृ.-20)

जोशी लाल जी, कल्याण जी एक पत्र में लिखते हैं –

आपके हस्ताक्षर कुं. बोहोत प्रेम में दण्डवत किया। (पत्र व्यवहार प्र. 295)

ऋषि के प्रति राजस्थान के राजाओं, उच्च अधिकारियों तथा सर्वसाधारण यहाँ तक कि एक पाप-ताप से सन्तप्त दुखिया देवी के भाव अत्यन्त भक्तिपूर्ण थे। यह बात मैं ऋषि के पत्र व्यवहार ही की साक्षी से ''आर्य'' की किसी पूर्व संख्या में सिद्ध कर चुका हूँ।

मेरे इस लेख का प्रयोजन केवल यह दिखाना है कि ऋषि दयानन्द सचमुच ऋषि थे, उन्होंने आध्यात्मिक अनुभूति तथा उससे सम्बन्ध रखने वाली सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। उसी अनुभूति का चमत्कार उनका निष्कलंक सच्चरित्र सम्पन्न जीवन था। उनकी सर्वस्व स्वाहा करने वाली असीम परोपकार की प्रवृत्ति, उनके प्राणिमात्र के लिए उन्नत दयाभाव, उनका जगत के उद्धारार्थ अनथक अविरल परिश्रम, आपत्तियों की उमड़ रही बाढ़ के सामने उनका अदम्य अटल धैर्य, अपने उद्‌देश्य की सफलता में उनका निरपेक्ष विश्वास, ये सब उसी एक अनुभूति के परिणाम थे।

ऋषि ब्रह्म का ध्यान करते-करते ब्रह्ममय हो गये थे। उनसे ब्रह्म अलग न था। वे ब्रह्म में रम रहे थे, और ब्रह्म उनमें। कहने को तो उन्होंने ब्रह्मानन्द को छोड़कर परोपकार का कार्य आरम्भ किया था, परन्तु ब्रह्मानन्द ने एक क्षण भी उनका पल्ला नहीं छोड़ा।

किसी भक्त के प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने स्वयं भी तो यही कहा था कि यह महान कार्य मैं बिना किसी योग के सिद्धि के नहीं कर रहा हूँ। ऋषि का योग की सिद्धि उनका आत्मदर्शन था।

वैदिक योग संन्यास आश्रम सोमधाम, खेड़ला, सोहना, गुरुग्राम (हरियाणा) के तत्वावधान में सवा लाख गायत्री मंत्र एवं सामवेद पारायण महायज्ञ का 13वाँ विशाल सत्संग समारोह सम्पन्न

वीतराग संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज रहे यज्ञ के ब्रह्मा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी प्रवचन

स्वामी सुमेधानन्द (सांसद) एवं आर्य रत्न ठा. विक्रम सिंह की रही गरिमामयी उपस्थिति

युवा संन्यासी स्वामी विजयवेश जी ने किया कार्यक्रम का संयोजन

वैदिक योग संन्यास आश्रम, सोमधाम, खेड़ला, सोहना, गुरुग्राम (हरियाणा) में दिनांक 11 से 15 अक्टूबर, 2023 की तिथियों में सवा लाख गायत्री मंत्र एवं सामवेद पारायण महायज्ञ का 13वाँ विशाल सत्संग समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सुमेधानन्द जी सीकर, संसद सदस्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, स्वामी धर्मदेव जी, ठा. विक्रम सिंह जी, स्वामी मुक्तानन्द जी–मंत्री वैदिक योग संन्यास आश्रम, श्रीमती रेखा चौधरी कोषाध्यक्ष, वैदिक योग संन्यास आश्रम, श्री कन्हैया लाल संरक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, सेठ राधाकृष्ण आर्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, श्री अशोक आर्य प्रधान केन्द्रीय सभा गुरुग्राम आदि विशेष रूप से सम्मिलित रहे। पांच दिन चलने वाले इस महायज्ञ के ब्रह्मा पद को स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने सुशोभित किया तथा पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था आदि का दायित्व आश्रम के प्रधान स्वामी विजयवेश जी ने बड़ी ही कुशलता के साथ संभाला।

इस महायज्ञ में स्वामी आर्यवेश जी यज्ञ के वास्तविक स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि जब तक हम अपने जीवन में समर्पण, सेवा, परोपकार तथा त्याग की भावना को व्यवहार में परिवर्तित नहीं करेंगे तब तक यज्ञ का सही लाभ हमें प्राप्त नहीं होगा। इदं न मम् यज्ञ का प्राण है और स्वाहा यज्ञ की आत्मा है। प्राण और आत्मा का परस्पर जो सम्बन्ध हम अपने शरीर में देखते हैं उसी प्रकार यज्ञ करते समय हमें यह अनुभव करना चाहिए कि अपने जीवन में इदं न मम् की उच्च भावना जब

तक हमारे अन्दर चरितार्थ नहीं होगी तब तक मनुष्य जीवन का लक्ष्य प्राप्त नहीं होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि यज्ञ में यजमान का संकल्प ही अग्नि होता है और जैसे भौतिक अग्नि के बिना देवयज्ञ (अग्निहोत्र) नहीं हो सकता ठीक उसी प्रकार ब्रह्मयज्ञ, बलिवैश्व देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ एवं अन्य विविध यज्ञ भी बिना संकल्प की अग्नि के पूरे नहीं हो सकते। यदि संकल्प की अग्नि तीव्र है तो सभी यज्ञीय कार्य सफल हो जाते हैं और यदि संकल्प की अग्नि मन्द पड़ जाये तो कोई भी उत्तम कार्य सफल नहीं हो सकता। वर्तमान समय में हर आदमी की यही स्थिति बनी हुई है। संकल्प की अग्नि की कमी से वह कोई भी यज्ञीय कार्य नहीं करता। मैं इस प्रकार के यज्ञ का आयोजन करने के लिए स्वामी विजयवेश जी तथा उनकी पूरी टीम की भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूँ। स्वामी विजयवेश जी वैदिक योग संन्यास आश्रम सोमधाम के माध्यम से क्षेत्र में वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार का कार्य बहुत सुन्दर तरीके से कर रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्वामी विजयवेश जी यज्ञीय परम्परा के कार्य को आगे बढ़ाते रहेंगे।

पांच दिन चलने वाले यज्ञ में अनेक वक्ताओं ने अपने–अपने विचार दिये तथा वैदिक योग संन्यास आश्रम सोमधाम के अध्यक्ष स्वामी विजयवेश जी तथा उनके सभी साथियों को वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार तथा यज्ञीय परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए मुक्त कंठ से प्रशंसा की। यज्ञ का कार्यक्रम पूर्ण सफलता के साथ 15 अक्टूबर, 2023 को सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में विजयदशमी के अवसर पर गायत्री महायज्ञ

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में सम्पन्न

यज्ञ की ब्रह्मा बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या रहीं

कार्यक्रम की अध्यक्षता बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने की

24 अक्टूबर, 2023 विजयदशमी के अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या जी ने यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित किया तथा पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता बहन प्रवेश आर्या ने की। इस महायज्ञ में टिटौली ग्राम की बहनों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

इस अवसर पर बहन पूनम आर्या ने यज्ञ में उपस्थित बहनों को गायत्री मन्त्र के एक–एक शब्द की व्याख्या करके बताया और सभी को प्रेरित किया कि वे प्रतिदिन गायत्री महामन्त्र का जाप अवश्य किया करें। उन्होंने कहा कि यदि हमारी बहनें अन्धविश्वास और पाखण्ड से दूर रहेंगी तो अपने बच्चों को उच्च संस्कार दे पाने में सफल होंगी। वैदिक विचारधारा ही सर्वोपरि विचारधारा है। इसलिए सभी को अपने परिवार में गायत्री महामंत्र तथा हवन आदि का कार्यक्रम अवश्य रखना चाहिए। बहन जी ने बताया कि परम्परागत शैली में नवरात्रों में अधिकांश परिवार व्रत नौ दिन तक उपवास रखते हैं। यदि वे सभी व्रत के सही अर्थ को समझकर अपने जीवन में लागू करें तो निश्चित रूप से समाज एवं राष्ट्र का भला हो सकता है। आज हम सभी बहनों को संकल्प लेने की आवश्यकता है कि हम अपने परिवारों को पाखण्ड एवं अन्धविश्वास से दूर रखेंगे तथा वैदिक परम्परा के आधार पर अपने जीवन को सुचारू रूप से चलायेंगे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में सुषमा आर्या, एकता आर्या, अंजलि आर्या, पूजा आर्या, शक्ति आर्या, पूनम आर्या, रोशनी, शकुंतला, शीला, प्रीति आर्या, रश्मि, सुदेश, कविता, ईश्वर सिंह आर्य, जिले सिंह आर्य, नरदेव आर्य, साहिल आर्य, सुमित्रा, रीना, सुनीता आदि उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का संयोजन वैदिक साधिका मण्डल की मंत्री बहन पूनम आर्या टिटौली ने किया।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अम्बाला छावनी का वेद प्रचार महोत्सव एवं वार्षिक समारोह दिनांक 20, 21 तथा 22 अक्टूबर, 2023 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

भारत की स्वतंत्रता में आर्य समाज का ऐतिहासिक योगदान है – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज चित्र की नहीं चरित्र की पूजा करता है – आचार्य ऋषिपाल

वैदिक संस्कृति का प्रखर प्रहरी है आर्य समाज – विजय गुप्ता

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अम्बाला छावनी का वेद प्रचार महोत्सव एवं वार्षिक समारोह दिनांक 20 से 22 अक्टूबर, 2023 की तिथियों में उत्साह एवं उल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। दिल्ली से पधारे वैदिक विद्वान् आचार्य ऋषिपाल शास्त्री ने तीन दिन तक वेदोपदेश के द्वारा लोगों को लाभान्वित किया तथा यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित किया। उनके साथ श्री भूपेन्द्र आर्य, श्री राजकुमार आर्य एवं श्री उमेश आर्य के भी भजनों का कार्यक्रम निरन्तर चलता रहा।

22 अक्टूबर, 2023 रविवार को कार्यक्रम के समापन सत्र में स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में पधारे तथा उन्होंने अपने ओजस्वी व्याख्यान में आर्य समाज की स्वतंत्रता आन्दोलन में ऐतिहासिक भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशती को व्यापक स्तर पर मनाने की रूपरेखा भी आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत की और उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम 200 नये लोगों से सम्पर्क करके महर्षि दयानन्द जी का साहित्य, उनका जीवन चरित्र, सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य छोटे–छोटे टैक्ट उन लोगों को दिये जायें। इसी प्रकार स्वतंत्रता आन्दोलन में महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से जिन क्रांतिकारियों ने बलिदान दिये

तथा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई उनके बारे में लोगों को बताया जाये। आर्य समाज का वैश्विक दृष्टिकोण अर्थात् मानव मात्र के उपकार की भावना से लोगों को अवगत कराया जाये। उन्होंने बताया कि पूरे विश्व में आर्यजन उत्साहित हैं और महर्षि दयानन्द जी के संदेश को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए संकल्पित हैं।

आचार्य ऋषिपाल जी ने अपने प्रवचन में सदाचार, संयम तथा व्यवहार कुशलता पर प्रकाश डालते हुए लोगों का आह्वान किया कि हमलोग अपने महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़कर प्रेरणा प्राप्त करें। उनके आदर्शों का अनुसरण करें और उनके द्वारा बताई गई अमूल्य बातों को अपने आचरण में लायें। उन्होंने कहा कि आर्य समाज चित्र की नहीं बल्कि चरित्र की पूजा करता है। दूसरी ओर लोग महापुरुषों के चित्रों की तो पूजा करते हैं, किन्तु उनके द्वारा दिखाये गये रास्ते पर नहीं चलते। आज इसकी अत्यन्त आवश्यकता है कि अपने महापुरुषों के आदर्शों को अपनाकर हम अपने जीवन को धन्य करें।

आर्य समाज के प्रधाना श्रीमती विजय गुप्ता ने जहाँ स्वामी आर्यवेश जी तथा आचार्य ऋषिपाल जी का हार्दिक धन्यवाद किया वहीं उन्होंने कहा कि आर्य समाज वैदिक संस्कृति का रक्षक एवं प्रखर प्रहरी है। आर्य समाज के सिद्धान्त सभी के लिए अनुकरणीय हैं। श्रीमती विजय गुप्ता ने आर्य समाज की ओर से प्रमुख कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों का भी शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान कराया। उनके साथ स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला मदान, आर्य समाज के मंत्री श्री राजकुमार गर्ग, कोषाध्यक्ष श्री सुनील गुप्ता, स्त्री आर्य समाज की संरक्षक श्रीमती सुचिन्ता सरना व मंत्री श्रीमती नीरू वालिया आदि पदाधिकारियों एवं श्री ओ.पी. सिंगला, श्री वी.पी. मदान, श्री महेश आर्य आदि कर्मठ कार्यकर्ताओं ने उत्सव को सफल बनाने में अपना पूरा योगदान दिया। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन प्रवेश आर्या की पूज्य माता जी स्व. श्रीमती सावित्री देवी की 15वीं पुण्य तिथि पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया

स्वामी आर्यवेश जी ने जीवन और मृत्यु विषय पर प्रकाश डाला

सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन प्रवेश आर्या की पूज्य माता जी स्व. श्रीमती सावित्री देवी जी की 15वीं पुण्य तिथि के अवसर पर दिनांक 23 अक्टूबर, 2023 को उनके निवास–सैक्टर–3, रोहतक पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में सभी पारिवारिक जन एवं शुभचिन्तक सम्मिलित हुए।

यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी का विशेष प्रवचन हुआ और उन्होंने स्वर्गीया श्रीमती सावित्री देवी जी को विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए जीवन और मृत्यु विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। स्वामी जी ने माँ की ममता और माँ के महत्त्व को भी अपने शब्दों में प्रस्तुत करते हुए कहा कि पृथ्वी से भी भारी माँ होती है। इस अवसर पर बहन पूनम आर्या ने भी स्व. माता जी के संस्मरण सुनाये। यज्ञ में माता जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री प्रदीप कुमार एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रभावती यजमान बनें। बहन प्रवेश आर्या ने यज्ञ की व्यवस्था को संभाला।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी, श्री ऋषि शास्त्री, श्री साहिल आर्य तथा बहन जी के पूज्य पिता मा. नफे सिंह जी के अतिरिक्त परिवार के अन्य सदस्य सर्वश्री कर्नल आर.के. सिंह, डी.एस.पी. अर्जुन सिंह, रामलाल सिंह, डॉ. परवीन्द्र, श्रीमती कृष्णा एवं श्रीमती शकुन्तला आदि भी यज्ञ में सम्मिलित रहे।

शराब के भयंकर दुष्परिणाम

– अमृतलाल मालवीय

आजकल देश-विदेश में भ्रष्टाचार, अनाचार और आतंकवाद आदि सामाजिक एवं राजनैतिक बुराईयों के मूल में नशा/शराब ही प्रमुख कारण है, जिसे हम आज तक नकार रहे हैं/झुठला रहे हैं। शराब एक विलासिता का पेय है। आज आम लोगों की धारणा है कि लोग गम, चिन्ता से मुक्त होने के लिए शराब पीते हैं। ऊँची, मंहगी शराब निश्चित ही इन बड़े घरानों के लिए यह एक दैनिक स्फूर्तिवर्धक टानिक, इसमें अन्य लोगों का कोई लेना-देना नहीं, किन्तु जब इसका प्रचलन न केवल मध्यम वर्ग अपितु समाज के सबसे निर्धन गरीब वर्ग में हो जाता है, तब यह चिन्ता का विषय है क्योंकि इसकी अनेकों बुराइयों के अलावा इससे गरीब/मध्यम लोगों की पारिवारिक आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। अपनी कमाई का आधा भाग ये पीने में ही खर्च कर देते हैं तब घर के शेष सदस्यों बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, दवाई/रोटी, कपड़ा और मकान की क्या हालत होती है आप हम सब स्वयं ही देख रहे हैं। इस सामाजिक बुराई के लिए तो सर्वप्रथम शासन को ही उत्तरदायी ठहराया जाना उतिच होगा क्योंकि उसी के संरक्षण में शराब बनती है। विक्रय होती है/लाइसेंस दिये जाते हैं/शासन इससे राजस्व प्राप्त करता है। कहने को तो इसकी रोकथाम हेतु शराबबन्दी कानून बनाती है, पर क्या इससे शराब पीना/बनाना बन्द हो जाता है?कदापि नहीं, वरन इसका चोरी से प्रचलन बढ़ जाता है। दूसरा स्रोत इसका सरकारी चुनाव है। बिना शराब के आज तक देश में कोई भी चुनाव सम्पन्न नहीं हुआ। वोट पाने/वोट खरीदने का यही एकमात्र शस्त्र है जिसकी आजतक अनदेखी हो रही है। इसे रोकने में सरकारें नाकाम साबित हो रही हैं। तीसरा स्रोत शासन की कार्य प्रणाली का यह प्रमुख अंग है। इसके द्वारा सरकार में बैठे कर्मचारियों/अधिकारियों/मंत्रियों से बड़े से बड़ा काम कराना आसान हो जाता है। शराब पार्टी इसका प्रमुख माध्यम है। शराब के नशे में/शराब पीने के बाद उन अधिकारियों/कर्मचारियों से अपने पक्ष में आदेशों पर हस्ताक्षर कराना बिल्कुल आसान हो जाता है। जो काम रुपयों-पैसों से नहीं होगा वह काम यह शराब करा देती है। चौथा स्रोत सरकार का आबकारी विभाग है, जो सरकार को अधिक से अधिक राजस्व उपलब्ध कराने हेतु ठेकों की विधिवत नीलामी करना है। यह विभाग शराब नियंत्रण के लिए बना है किन्तु नियंत्रण के बजाय इससे शराब की दुकानों की निरन्तर वृद्धि हो रही है। नीलामी की राशि में बढ़ोत्तरी हो रही है। इस शराबखोरी की विभीषिका के कुछ उदाहरण/विवरण संक्षेप में निम्नानुसार प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

1. शराब नशा से मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। आंते जल जाती हैं, शराब पीने वालों की औसत उमर कम हो जाती है विश्व स्वास्थ्य संगठन की सर्वे रिपोर्ट से यह तथ्य साबित होता है।

2. मध्यम एवं निम्न वर्ग के लोगों के परिवार शराब पीने से बर्बाद हो जाते हैं। लोग न तो अपने बच्चों को अच्छा पढ़ा सकते हैं और न ही लिखा सकते हैं। परिवार के अन्य सदस्य भी आर्थिक पीड़ा से त्रस्त होते हैं। वे गाली खाते हैं, कदाचरण के शिकार होते हैं।

3. महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार/बलात्कार, रेप आदि मामलों में अधिकतर शराबी व्यक्तियों को ही अपराधी पाया जाता है। ये लोग नशे की हालत में न केवल अपनी बहन, बेटियों, माँ को अपितु अबोध बालिकाओं तक को अपना शिकार बनाकर बलात्कार कर डालते हैं।

4. शराब से देश की संस्कृति नष्ट हो रही है। एक नशेड़ी से संस्कृति की क्या अपेक्षा की जा सकती है। वह तो एकदम नंगा-पशु बन जाता है। उसे जब अपनी माँ, बहन, बेटी की मर्यादा का ध्यान नहीं रहता तब उसे समाज देश की संस्कृति का कैसे ध्यान रहेगा?गाली, गलौज, मारपीट करना, चिल्लाना इन शराबियों की प्रमुख आदत होती है ऐसे में घर-परिवार का वातावरण कैसा रहता होगा, आप हम सब जानते हैं।

5. दुश्मनी, अनजाने में शराबखोरी अधिक कामयाब होती है। नशा कर मारपीट करना आसान हो जाता है।

6. कत्ल, हत्या आदि के मामलों में भी मूल कारण व्यक्ति का शराब के नशे में होना पाया जाता है, इस सत्य को कोई नकार नहीं सकता।

7. शराब पीकर अपराध करने पर सम्भवत: कानून में भी रियायत मिलती है। अक्सर शराबियों को अपराध करने पर थाने में लाया जाता है किन्तु उन्हें छोड़ दिया जाता है। उन पर कानूनी दफा नहीं लगाई जाती, यह कहकर कि इस व्यक्ति ने शराब की हालत में यह अपराध किया है और मामला रफा-दफा कर दिया जाता है। इस प्रकार नशा कर अपराध करना आसान हो जाता है।

8. रेल, मोटर, यातायात, दुर्घटनाओं में भी सम्बन्धित कर्मचारियों का नशे की हालत में होना पाया जाता है। वाहनों की टक्कर में 90 प्रतिशत मामलों में चालकों का नशे में होना पाया जाता है।

9. शराब के बिना शादियों की पार्टियाँ और नृत्य सम्भव नहीं यहाँ तक कि अन्य समारोहों/धार्मिक समारोहों तक में भी अब शराब और डांस आम बात हो गई है।

10. इस नशे की लत में पीढ़ी बरबाद हो रही है। बच्चे अपने शराबी पिता का ही अनुकरण कर शराब पीने लगे हैं। उनके लिए बाजार से शराब खरीदकर लाकर देते हैं। इंजीनियरिंग और उच्च शिक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी भी अब शराब और नशे के शिकार हो रहे हैं। स्कूली बच्चे भी स्मैक, गांजा, भांग का सेवन करने लगे हैं। कुछ नशीले गुटके भी ये विद्यार्थी खाने लगे हैं। रेलगाड़ियों में झाड़ू लगाने वाले बच्चे तथा कबाड़ बीनने वाले बच्चे सफेद नशे/चरस की लत में पड़कर रेल सफाई तथा अन्य निम्न स्तर के कार्य कर रहे हैं।

उपरोक्त विवरण तो एक बानगी ही है। शराब, नशा तो अब कलियुग की पहचान बन गया है। इसने अब तो हमारे धार्मिक/आराध्य स्थलों तक को नहीं छोड़ा है। अनेकों पुजारी, पण्डे, साधु नशे की लत में लिप्त हैं। क्या साधुओं को शराब पीना शोभा देता है?कदापि नहीं, किन्तु वे तो कहते हैं कि यह भोले का प्रसाद है। अब बताइये ऐसे साधुओं के बारे में आपकी क्या धारणा होगी?निश्चित ही इस शराब, नशे की मूल में वही धन, सम्पत्ति, रुपया, पैसा ही होता है, जो अनाधिकृत रूप से प्राप्त किया जाता है, कमाया जाता है। भ्रष्टाचार और काले धन या टैक्स चोरी आदि की कमाई में भी शराब विद्यमान रहती है। विश्व में फैल रहे आतंकवाद के मूल में भी बड़े पैमाने पर शराब, नशीले पदार्थों का सेवन होता है तथा इनकी तस्करी से प्राप्त धन से ही आतंकवाद संचालित होता है। जीवित रहता है। आफिस का एक छोटा सा बाबू या चपरासी भी दिनभर अपनी एक पौआ शराब के लिये पैसें की जुगाड़ में लगा रहता हैं, हालांकि यह आम बात नहीं है फिर भी इसे उदाहरण ही मान लें तो पर्याप्त होगा। इस सत्य को भी कभी नहीं नकारा जा सकता है कि यह सब पश्चिमी सभ्यता की ही देन है। प्रत्येक व्यक्ति शराब पीकर अंग्रेज बनना चाहता है, मौज मस्ती में डूबना चाहता है। लोगों की यह गलत धारणा है कि अंग्रेज लोग सभी नियमित शराब का सेवन करते हैं। पर आपने कभी यह सोचा कि वे तो धनाढ्य हैं, सम्पन्न हैं, पर हम हमारे घर में तो खाने को दाना नहीं, बच्चे, पत्नी, माता-पिता सब भूखे हैं और हम इस स्थिति में भी शराब पीकर न केवल अपने आपको वरन पूरे परिवार को बरबाद कर रहे हैं। इस समय सुसंस्कृत समाज में शराब से अधिक घातक और विषैला और कोई जहर नहीं हो सकता है।

अस्तु इस वर्तमान समय में मानव मानवता की खातिर परिवार समाज और देश को बचाना है तो सर्वप्रथम शासन तंत्र की ओर से इस दिशा में सक्षम, कारगर कार्यवाही की जाये, उपाय किये जावें। इसके लिए सर्वप्रथम तो देश में शराब बनाना बन्द किया जाये। सरकार का आबकारी विभाग अब केवल यही कार्य करे। देशी-विदेशी दोनों प्रकार के शराब कारखानें, गोरखधन्धे बन्द किये जावें। इसके लिये यदि देश में कोई सख्त कानून की आवयकता हो तो तत्काल बनाया जावे। अवैध शराब बनाने वालों पर सख्त कानूनी कार्यवाही के तहत उम्र कैद तथा फांसी तक की सजा का प्रावधान हो। विदेशी शराब पर अधिकतम कस्टम ड्यूटी लगाकर इसके आयात को नियंत्रित किया जाये। विदेशी शराब इतनी मंहगी हो कि आम आदमी उसे नहीं खरीद सके। अवैध देशी शराब बनाने वालें, पीने वालों को बिना जमानत गिरफ्तार कर कानूनी कार्यवाही की जाये। महुये का संग्रहण पूर्णत: गैर कानूनी किया जाये। शराबा के विकल्पों, ताड़ी या अन्य नशीले पेय पदार्थों तथा चरस, गांजा, भाँग आदि के व्यापार, उत्पादन तथा क्रय-विक्रय पूर्णत: प्रतिबन्धित, नियंत्रित किये जाये। इन सभी नशीले पदार्थों पेय पदार्थों को अनिवार्यत: आबकारी विभाग के तहत लाकर कार्यवाही की जाये। नशा किसी भी प्रकार का हो, वह मनुष्य समाज, देश तथा मानवता के लिए घातक, विनाशक ही होगा।

– ***इन्दौर, मध्य प्रदेश***

पृष्ठ 2 का शेष

संस्कारों के सन्दर्भ में ऋषि दयानन्द सरस्वती

किसी गृह्यसूत्रकार ने वानप्रस्थ तथा संन्यास का उल्लेख नहीं किया। इसका कारण यह है कि ये गृह्यसूत्र गृहस्थ सम्बन्धी कर्त्तव्यों का वर्णन करते हैं अन्यों का नहीं। वानप्रस्थ और संन्यास का गृह कर्मों से कोई सम्बन्ध नहीं, अत: इनका विधान गृह्यसूत्रों में नहीं मिलता। इन दोनों संस्कारों का विशेष वर्णन ब्राह्मण और स्मृतियों में आता है, और स्वामी जी ने यह संस्कार उन्हीं के आश्रय से लिखे हैं। आश्वलायन और कौशिक गृह्यसूत्र के अतिरिक्त किसी गृह्यसूत्र में अन्त्येष्टि का वर्णन नहीं है, किन्तु यजुर्वेद तथा मनुस्मृति में अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन है। स्वामी दयानन्द की मान्यताओं में वेद तथा मनुस्मृति प्रतिपादित सिद्धान्तों का प्राधान्य है। अत: स्वामी जी ने अपनी 'संस्कार-विधि' में सोलहवें संस्कार के रूप में अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन किया है। आश्वलायन गृह्यसूत्र तथा कौषीतकि में –

1. निष्क्रमण, 2. कर्णवेध, 3. वानप्रस्थ तथा 4. संन्यास का उल्लेख नहीं है। इसी प्रकार गृह्यसूत्र में 'गर्भरक्षण' नाम का संस्कार अधिक लिखा है। जिसे पुंसवन के बाद चतुर्थ मास में कराने का विधान हैं इस गृह्यसूत्र के अतिरिक्त किसी अन्य गृह्यसूत्र में यह संस्कार नहीं मिलता। पारस्कर गृह्यसूत्र में वानप्रस्थ संन्यास और अन्त्येष्टि का वर्णन नहीं है। इसी प्रकार उपरिलिखित गृह्यसूत्रों में किसी में 12 बारह, किसी में 10 दस, किसी में 13 तेरह, 14 चौदह संस्कारों का उल्लेख मिलता है। अधिक से अधिक 48 संस्कारों का उल्लेख भी कुछ गृह्यसूत्रों तथा निबन्धों में है। परन्तु स्वामी जी मुख्य रूप से 16 सोलह संस्कारों का उल्लेख उसकी उपयोगिता और उसकी विस्तृत विधि का वर्णन संस्कार विधि में करते हैं। स्वामी जी द्वारा अभिमत 16 संस्कार निम्न हैं –

1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकर्म, 9. कर्णवेध, 10. उपनयन, 11. वेदारम्भ, 12. समावर्तन, 13. विवाह, 14. वानप्रस्थ, 15. संन्यास, 16. अन्त्येष्टि।

ऋषि दयानन्द ने विभिन्न गृह्यसूत्रों तथा मनुस्मृति के आधार पर अत्यन्त उपयोगी 16 (सोलह) संस्कारों के क्रियाकलाप का वर्णन अपने 'संस्कार विधि' संज्ञक ग्रन्थ में किया है। संस्कार विधि की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं :-

1. चारों वेदों में मंत्रों, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यक, उपनिषद्, गृह्यसूत्र तथा मनुस्मृति के प्रमाणों से संकलित हैं गृह्यसूत्रों के अतिरिक्त वेद तथा मनुस्मृति के प्रमाण अधिक संख्या में दिए गए हैं।

2. प्रत्येक गृह्यसूत्र किसी न किसी वेद से सम्बद्ध है। स्वामी जी ने चारों वेदों से सम्बद्ध मुख्य गृह्यसूत्रों का उपयोग 'संस्कार विधि' में किया है, इससे 'संस्कार विधि' संस्कारों का एक समग्र ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध हो गया। स्वामी जी ने चारों वेदों से सम्बद्ध जिन गृह्यसूत्रों का उपयोग 'संस्कार विधि' में किए हैं उसका उल्लेख इस प्रकार है –

1. ऋग्वेद का आश्वलायन गृह्यसूत्र, 2. यजुर्वेद का पारस्कर गृह्यसूत्र, 3. सामवेद का गोभिल गृह्यसूत्र तथा मन्त्रब्राह्मण एवं 4. अथर्ववेद का शौनक गृह्यसूत्र।

इसका परिणाम यह हुआ कि चारों वेदों के गृह्यसूत्रों के अनुसार संस्कार करने-कराने वालों के लिए यह एक उपयोगी ग्रन्थ बन गया।

3. संस्कारों की कतिपय विधियों में मांसभक्षण का विधान गृह्यसूत्रों में मिलता हैं विशेषकर मधुपर्क के निर्माण में तथा अन्नप्राशन में। किन्तु स्वामी दयानन्द ने स्वरचित 'संस्कार विधि' में मांस, मछली तथा सुरा को कहीं किसी रूप में स्थान नहीं दिया।

4. गृह्यसूत्रों में संस्कार का पात्र मुख्यत: ब्राह्मण या द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को माना गया है। स्वामी जी संस्कारों का पात्र मानव मात्र को मानते हैं। संस्कार श्रद्धा और भक्ति पूर्वक कोई कर सकता है। स्वामी जी के अनुसार संस्कारों को करने वाला द्विज है और द्विजत्व का निर्धारण गुण, कर्म तथा स्वभाव के आधार पर शूद्र कुलोत्पन्न बालक को संस्कार के अयोग्य नहीं माना जा सकता।

5. गृह्यसूत्रों में स्त्री या नारी वर्ग के प्रति अत्यन्त ही भेदभाव मिलता है। मनुस्मृति और अनेक गृह्यसूत्र अनेक संस्कारों के लिए स्त्री को अधिकारी ही नहीं मानते हैं। संस्कारों की अनेक विधियाँ स्त्रियों के लिए विहित नहीं हैं या उन विधानों को स्त्री (बालिका) के संदर्भ में मन्त्रपाठरहित मौन होकर सम्पन्न करना है। स्वामी जी ने इस प्रकार के भेदभाव की कड़ी समीक्षा की है और स्त्री-पुरुष दोनों के लिए समान रूप से सभी विधियों का विधान किया है।

Maharishi Dayanand's Enlightening

By- R.C. Bhardwaj 'Dhiman-Shri'

If we talk of Maharishi Dayanand in reference to his enlightening spirit, he stands first after Mahabharat. On this land of India no such enlightened personality took birth as Maharishi Dayanand, who did his best to glorify India, establishing the same style of life as in our past.

All the movements of Mahatma Gandhi's Philosohpy are mostly derived from what Maharshi Dayanand pleaded for. Whether it is a case of the regeneration of women or the uplift of down trodden.

He studied deeply about the essentials of Indian culture and civilization. The first and the foremost problem of the country Bharat was to solve by achieving independence. So he infused the spirit and enthusiasm in the people and created a national feeling of liberty. He wrote a historical book named the Satyarth Prakash, which really opened the eyes of the people and compelled them to fight against Britishers who were ruling and looting our country. Having studied this book many Youths felt themselves to be fired up with feelings of independence. Many of them had to lose their lives. This book is, really, a mile-stone, this book is an analysis of our culture. It is a High Powered Light-House. Through his mission of Arya Samaj, Maharshi enlightened the souls of the countrymen. Now after a span of century this arganization is a cosmopolitan one.

Maharshi Dayanand has arroused the insight of the people.

He brought about the system of Trinity that is God, Spirit and Matter or Nautre. He had cured the people troubled by metaphysical misleadings and misunderstandings. He studied the Vedas and other Vedic concept provoking literature. He advocated that the Vedas are the speeches of God. They are eternal. The four Vedas (Rig., Yaj., Sam., & Ath.) came to light through The four rishis namely Agni, Vaayu, Aditya and Angira. All of these contain the material dealing with every branch of Science. He declared: 'The Vedic religion is a scientific religion.' It deals with devotion and logic.

He wrote many notable books as the Rigvedadi-Bhashya-Bhumkika, The Panch-Maha Yajya Vidhi, the Sanskar Vidhi, the Gau karuna- Nidhi etc. and translated the Yajurveda completely.

He pleaded for Hindi which he called 'Dev-Nagari'. His all translation-work was in that language. He declared- it may be our National Language.

Born in 1824 in Gujrat, he died in 1883 on the eve of Deepawali. Definitely, he kindled thousands and crores of the Humanly Lamps. No matter he left this world so early. So we are so unfortunate to be deprived of all treasure he had. We can never be excused. He was a grand enlightened one.

—Hapur (Gzb.)

श्री सौभाग सिंह चौहान की धर्मपत्नी श्रीमती रेणू चौहान जी का असामयिक निधन

जोधपुर, (राजस्थान) : आर्य समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता आदरणीय श्री सौभाग सिंह चौहान की धर्मपत्नी श्रीमती रेणू चौहान जी का बुधवार दिनांक 25 अक्टूबर, 2023 को आकस्मिक निधन हो गया है। उनका अन्तिम संस्कार सिवाची गेट स्वर्गाश्रम श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। माता जी धर्मपारायणा एवं कुशल गृहणी थीं। उन्होंने अपने कर्त्तव्यों को करते हुए परिवार का लालन–पालन किया तथा अपने पति के कंधे से कंधा मिलाकर सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में भाग लिया करती थीं। माता जी के असयम चले जाने से जहां परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है वहीं समाज एवं राष्ट्र की भी अपूर्णीय क्षति हुई है। हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों को इस असहनीय कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ प्रकाश

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/– रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष – 011–23274771, 011–42415359, मो.:–9868211979, 8218863689

ई-मेल : ***sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in***

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

ग्राम–भौरा कलां, जिला–मुजफ्फरनगर (उ. प्र.) में तीन दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ का विशेष आयोजन दिनांक 22, 23 व 24 अक्टूबर, 2023 की तिथियों में धूमधाम के साथ हुआ सम्पन्न

यज्ञीय परम्परा को अपनाकर ही समाज का उद्धार हो सकता है – स्वामी आर्यवेश

परोपकार एवं समर्पण ही यज्ञ का सार है – स्वामी आदित्यवेश

यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है – स्वामी सत्यवेश

पूरे क्षेत्र में सामवेद महायज्ञ की रही धूम – अंकित शास्त्री

किसी भी श्रेष्ठ कार्य को यज्ञ कहा जाता है – गौरव टिकैत

पूरे क्षेत्र में गांव–गांव यज्ञ अभियान चलायेंगे – सहसरपाल आर्य

ग्राम–भौरा कलां, जिला–मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में तीन दिवसीय सामवेद पारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन दिनांक 24 अक्टूबर, 2023 को धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। ग्रामवासियों के सहयोग से इस महायज्ञ का आयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के व्यायामाचार्य ब्र. सहसरपाल आर्य के कुशल संयोजन में किया गया। यज्ञ में ब्रह्मा पद को त्यागी, तपस्वी संन्यासी स्वामी सत्यवेश जी ने सुशोभित किया और श्री अंकित शास्त्री एवं श्री गंगाशरण शास्त्री ने वेद पाठ का दायित्व निभाया। कार्यक्रम में बहन सुकीर्ति आर्या भजनोपदेशिका के मधुर भजनों का कार्यक्रम चलता रहा। प्रातः और सायं दोनों समय चलने वाले इस महायज्ञ में हजारों लोगों ने आहुतियां प्रदान की। यज्ञ में क्षेत्र के अनेक गांव से प्रबुद्ध आर्यजन सम्मिलित हुए। यज्ञ के उपरान्त उपदेश हेतु स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी के अतिरिक्त युवा किसान नेता श्री गौरव टिकैत जी भी कार्यक्रम में पधारे और अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

स्वामी आदित्यवेश जी ने 22 अक्टूबर, 2023 को अपने विचार प्रकट करते हुए युवकों को यज्ञ से प्रेरणा लेने का आह्वान किया और कहा कि जैसे यज्ञ सभी प्राणियों के लिए लाभकारी है, ऐसे ही हमें भी सभी प्राणियों के प्रति मैत्री एवं प्रेम की भावना रखनी चाहिए।

23 अक्टूबर, 2023 को स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक संस्कृति और यज्ञ विषय पर अपना सार–गर्भित व्याख्यान देते हुए बताया कि वैदिक संस्कृति यज्ञीय संस्कृति है। वैदिक संस्कृति औरों के दुःख बांटने तथा औरों को भोजन कराकर स्वयं को भोजन करने की प्रेरणा देती है। अर्थात् प्राणी मात्र के कल्याण की भावना वैदिक संस्कृति अर्थात् यज्ञ से प्राप्त होती है। स्वामी आर्यवेश जी ने क्षेत्र के सभी गांव में यज्ञों के आयोजन के द्वारा लोगों की बुराईयां एवं व्यसन छुड़वाने का आह्वान चलाना चाहिए और प्रत्येक गांव में आर्य समाज और आर्य युवक परिषदों का गठन करना चाहिए। स्वामी जी को सुनने के लिए सिसौली, लाख, बहावड़ी, कुंडभर, धनौरा, लिसाड़, लालूखेड़ी, भाजू, छपरौली आदि गांव के लोग भी कार्यक्रम में शामिल रहे।

24 अक्टूबर, 2023 को युवा किसान नेता श्री गौरव टिकैत सम्मिलित हुए और उन्होंने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि प्रत्येक अच्छे कार्य को यज्ञ कहा जाता है। उन्होंने कहा कि किसानों के हकों की लड़ाई लड़ना और उन्हें न्याय दिलाना भी एक यज्ञ है। मैं चाहता हूं कि आर्य समाज की ताकत और बढ़े तथा गांव–गांव में आर्य समाजें बनाई जायें। मेरा इसमें पूरा सहयोग रहेगा।

प्रमुख वेद पाठी श्री अंकित शास्त्री ने अपने वक्तव्य में बताया कि सामवेद की चहुं ओर धूम मची हुई है, सैकड़ों लोगों के टेलीफोन आ रहे हैं और अपने यहां यज्ञ कराने के लिए आग्रह कर रहे हैं।

कार्यक्रम के संयोजक ब्र. सहसरपाल जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि वे अपने साथियों से विचार–विमर्श करने के पश्चात् क्षेत्र के विविध ग्रामों में यज्ञ अभियान चलायेंगे और लोगों से बुराईयाँ छुड़वाने की कोशिश करेंगे।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में सवामी सत्यवेश जी की ओजस्वी कविताएं अत्यन्त प्रभावित करने वाली रहीं। कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

कर्मयोगी स्व. श्री मदन सिंह जी आर्य की 92वीं जयन्ती प्रेरणा सभा के रूप में मनाई गई

आर्य वीर दल जोधपुर के तत्वावधान में कर्मयोगी स्व. श्री मदन सिंह जी आर्य की 92वीं जयंती प्रेरणा सभा के रूप में आर्य समाज फोर्ट गोल नाड़ी, उम्मेद चौक, जोधपुर में मनाई गई।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री नारायण सिंह जी आर्य उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने बताया कि स्व. श्री मदन सिंह जी आर्य का पूरा जीवन सामाजिक रहा और उनके फौज की जीवनी पर भी विस्तार से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर आर्य वीर दल राजस्थान के महामंत्री श्री जितेंद्र सिंह जी, सहकोषाध्यक्ष राजस्थान श्री गजेसिंह जी भाटी, जोधपुर अध्यक्ष श्री हरिसिंह जी आर्य, संयोजक श्री लक्ष्मण सिंह जी, कोषाध्यक्ष श्री मदन गोपाल जी आर्य, पूर्व सचिव सेवा संस्थान विरुमल जी आर्य, ओलंपिक संघ अध्यक्ष जोधपुर श्री पूनम सिंह जी शेखावत ने भी स्व. श्री मदन सिंह जी आर्य के जीवन से प्रेरित दृष्टान्तों से सभी को भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम का संचालन श्री उम्मेद सिंह जी आर्य ने किया। अंत में आर्य समाज फोर्ट के

प्रधान श्री गणपत सिंह जी आर्य ने जय घोष के साथ सभी को धन्यवाद दिया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-42415359, 23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।